अंतरा-शब्दशक्ति

एक मुलाकात

काव्य संग्रह

डेज़ी जूनेजा

एक मुलाकात

(काव्य संग्रह)

डेज़ी जूनेजा

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-31-5

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © डेज़ी जूनेजा

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Ek Mulakat' by 'Dezy Juneja'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

भूमिका

मैं डेज़ी जूनेजा,...एक छोटी सी लेखिका! साहित्य तो कब से मुझसे बसा था, पर ख़ुद से परिचित ना हो पाई । लिखने की अपनी कला को पहचान न सकी । पढ़ती थी जब मौका मिला कॉलेज के वक़्त से। कई संग्रह थे कविताओं का शेरों शायरी के मेरे पास, कोई भी शायर हो पंजाबी या ग़ज़लकार मुझे पढ़ना अच्छा लगता है उन्हें । रूहानी शायरी लिखना बहुत पसंद है हमें ।

पर हाँ अपने हुनर से कुछ ख़ास करना चाहती हूँ ..अपने इस दोगले समाज को आईना दिखाना चाहती हूँ । जो काम तलवार से नहीं हो सकता, क़लम से करना चाहती हूँ ..कुछ कुरीतियाँ जो समाज को खोखला कर रही है....उन्हें लफ़्ज़ देना चाहती हूँ ...समाज को जागृत करना चाहती हूँ ।

अदना सी हूँ,..पर कुछ ख़ास करना चाहती हूँ,..।

डेज़ी जूनेजा

अनुक्रमणिका

1.	खामोशियाँ	5
2.	फरेब	6
3.	छूकर गई जिस्म मेरा	7
4.	एक खूबसूरत कसक	8
5.	लाज़मी है दर्द होना	9
6.	गुज़रे वक्त के लम्हे	10
7.	एक बूँद	11
8.	बावफ़ा है दर्द मेरा	12
9.	आवाज़ हमारी तौल कभी	13
10.	माटी सा मन मेरा	14
11.	इश्क तुम रहने भी दो	15
12.	सागर किनारे	16

खामोशियाँ

एक खामोश सी चीख
निशब्द हुई आवाज़
दूर तलक
तनहाइयो को बींधती
न जाने आँखो में
जज्ब सी हो गई,..
एक पुकार
बरबादियों को ओढ़े
गुमनामियो में भीगी
कत्ल हुई ख्वाहिशों को
रूह में उठाए ...
काली स्याह सैलाब में डूबी
आँखो से बह निकली,..
एक खामोश सी खामोशी
लबों को सिले हुए,..
बेजुबां हर्फो की माला पिरोये,
दिल को चिरती
जज्बातों को
आँखो तक लाकर
पलकों के बिछौने पर ठहर गई,...
मेरी खामोशी,..मेरी तन्हाई,
अपनी ही सूरत से अनजानी
अपने ही अक्स को निगल गई ....
एक खामोश सी चीख

फरेब

मेरी आँखो ने
मुझसे ही फरेब
कर दिया .
ख़्वाब तो मेरे थे ..
पर निग़ाहों में
तुझे भर दिया।
ढूंढे तुझे हर पल
मेरी नज़र
मैँने तेरी प्रीत को
सहेज़ कर रख दिया,
दिल तो मेरा था
पर तेरे इश्क़ मे
रँग दिया।
रूह रूह निखरी
खनक लिए स्नेह की,
चाहत को तेरी मैंने
पाजेब कर दिया
ये जिस्मों जां तो मेरी थी
झनकार को तेरी
पहन लिया ...॥
मेरी आँखो ने
मुझसे ही
फ़रेब कर दिया
पलक़े तो मेरी थी
काज़ल बना
तुझे सजा दिया,..

छूकर गई जिस्म मेरा

उसकी आँखो की नमी मेरी पलकों पर ठहर गई,

लफ्ज जो छू कर गुजरे
लबों को उसकी
कतरा ए शबनम लिए
मुझमें सरगम सी भर गई,

सिल गई ज़ख्म मेरा
उसके यादों की वफा,..
एहसास ए महक इश्क की
रूहे पाकीजगी लिए सज गई,

रोम रोम यूँ रमा हैं
चाहत में उसकी
उसकी प्रीत मेरी
रूहानियत को छू गई,

छूकर गई जिस्म मेरा
उसके दामन की हवा
धुंध सी बिखरी उसकी यादें
मुझे उसके ओर क़रीब कर गई,

महका गई आँचल मेरा उसकी वफाओ की सदा,...

एक खूबसूरत कसक

एक कसक सी .
उन लम्हों की
जो फिसल गए
तेरे मेरे हाथों से
खूबसूरत ख्वाहिश सी ,...

महकते आगोश में भीगने की,
एक खलिश सी
एक कसक सी
पंखुडी सी बिखरी
फ़िर भी सिमटी सी,...

ओस की बूँद संग
पलकों में चमकी सी
बेशक नाजुक से
ख़यालो में लिपटी
वो सिंदूरी शाम,..

पलकों के बिछौने पे
आज भी सजी है,
तेरे मेरे मिलन की
वो आखरी
मखमली शाम,...

लिये एक कसक सी
उन लम्हों को फ़िर से जीने की,...

लाज़मी है दर्द होना

जख्म है तो,.. लाज़मी है दर्द होना
बेशक़ दिखते नहीँ..
दर्दे जिग़र पे एहसासों की परत जो लगी है
यादें है,... तो लाज़मी है अश्कों से धोना,
सूख जाते है कुछ नासूर ए ज़ख्म
बस चंद बूँदों से धोने पड़ते हैं
रिसते रहते हैं कतारों में
वो दर्द जो लम्हों में ठहरे रहते हैं,
ज़िस्मों जां है,... तो लाज़मी है चाहत होना
बेशक़ बेसबब बेइंतहां
निगाहो में कशिश की परत जो चढ़ी है
रूह से है,... तो लाज़मी है पाकीजा होना,
आह बन कर टपकते हैं पलकों से
लबों से ज़ाम ए हंसी पीते हैं
आँखो में रहते है दर्द ग़ज़ल बन
वो ज़ख्म जो रूह में उतर जाते है....
जख्म है तो,.. लाज़मी है दर्द होना,

कभी-कभी यही दर्द जीने की वजह बन जाते हैं।

गुज़रे वक़्त के लम्हें

गुज़रे वक़्त क़े मखमली लम्हें फटने लगे हैं..
समेटे रखे थे अब तक़ दिल की दराज़ में जो
सीलन क़े धब्बों से वो काले पड़ने लगे हैं ..
सोचा आज़ क्यूँ न सैलाब ले आएं हम,..
समेट नहीं सकते तो क्यूँ न बह जाएं हम,
वक़्त की सिलावटों में जिंदगी तस्वीर बन उभर आई
जब आज़ फ़िर उन क़िस्सों की य़ाद आई ....
पलकों पर रखे वो ख्वाबों क़े पुलिंदे मिटने लगे हैं,
सज़ाएँ रखे थे सदियों से रूहों की दरो दीवार पे जो,
पानी की कतारो में डूबने लगे हैं..
बहा दूँगी आज़ उफनते दर्द को बहाव में,
छलका दूँगी कतरा-कतरा लम्हें हिस्सों में,
उलझती जा रही है जिंदगी,..
चाहतों के मरहम से सीने चली थी,
भरते जख्मों को फ़िर से रिसने क़े लिए छोड़ आई,
जीने को रखे थे चँद लम्हें जो वो बिखरने लगे हैं
एहसासों में महक लिए बैठे थे जो
सड़न लिए यकीं के ख्वाबों को कुतरने लगे हैं..
गुज़रे वक़्त क़े मखमली लम्हें फटने लगे हैं ..
समेटे रखे थे अब तक़ दिल की दराज़ में जो
सीलन क़े धब्बों से वो काले पड़ने लगे हैं ..

एक बूँद

एक बूंद
जो न जाने कब से ठहरी थी,
एक बूँद जो पलक में
ओस की बूँद सी चमकी थी,
नैनो में बन बादल
इनमें छुपी बैठी थी एक ख्वाहिश
जो कहीं शायद टूटी थी,
एक ख्वाहिश जो कहीं शीशे सी बिखरी थी,
भटकती एक बदली सी
नैनो में खोई थी एक याद
जो बूंदो ने पिरोई थी
वो लम्हा एक पल
याद कर शायद रोई थी,
तभी वो एक बूँद
मुझसे जुदा हुई थी,..
वो एक बूँद फिर से पलकों पे ठहरी थी,
ओस सी ख्वाहिश संग याद को लिए,
फिर तुझसे मिलने चली थी,...
हवाओं में नमी ..
एक सीलन सी फैलाई थी,
आज़ फिर तेरी याद जो आई थी,
एक बूँद जो आँख में पली थी,
वो विदा होने चली थी,..वो एक बूंद

बावफ़ा है दर्द मेरा

जी रहे है तेरी ही शर्तो पे फ़िर क्यूँ तू खफ़ा,
बावफ़ा है दर्द मेरा जिंदगी तू बेवफ़ा।

अश्कों पे आके ठहर जाते है किस्से यादों के,
मेरा दामन भीगो जाती हैं तिरी झूठी जफ़ा।

इश्क़ मेरा बावफ़ा सजदो में रहता है सदा,
ख्यालो में तुम ...क्यूँ हुए तुम बेवफ़ा।

छेड़ी है सरगम हवाओं ने...तुझे छूआ होगा,
तन्हा रातों में तड़प सी उठती हूँ सौ-सौ दफा।

है मुहब्बत गर ख़ता तो हो गया हमसे गुनाह,
हद से जाएँगे गुज़र लगने दो कोई भी दफ़ा।

चाहतों के़ सिलसिले सदियों से रूहों में बसे,
इश्क़ गर हो पाकीजा तो दूरियों से क्या नफ़ा।

आवाज़ मेरी तौल कभी

लफ़्ज़ो को पनाह नहीं मिली
रुके रहे लफ्ज़ लबों पे आकर
आँखो में खामोशियाँ छाई
बेशक़ पास तेरे आकर,...

पढ़ मेरी बेबस निग़ाहों को
आवाज़ मेरी तौल कभी
लबों से लफ्ज़ चुन कर,...
टूटने लगती हूँ ...बिन तेरे

अनकहे से राज समेटे हुए
बिखरे लम्हे तेरी चाहतो क़े,..
राहतें दे मुझे क़रीब आकर मेरे
रूबरू भी आके मिल कभी,...

ख्वाबों क़े चिलमन से निकल कर

माटी सा मन मेरा

माटी सा ढला है मेरा मन बस चुपचाप सा ..
कभी इस दिशा तो कभी उस ओर
कितनी कश्मकश में गुंधा हुआ
कभी पानी की बूँदों संग मिला सा,..
तो कभी हादसों में पलता खामोश सा
क्यूँ पल पल ढल जाता है मेरा मन
इस चिकनी मिट्टी सा
पर है किसे परवाह ..
दफन होते मेरे एहसासों की..
सुलगते है ज़ख्म मेरे
जज्बातों की आँच पर फिर से पकने को,...
खामोशियाँ मेरे लबों की अश्कों में ढल जाती है
बनकर मेरे जख़्मों की जुबां,
क्या है सच ?
मिट्टी और मेरा एक ही है वजूद?
छलकता है मन मेरा
मिट्टी को भी ढलना है
छोड़ अपना खुद का आकार
मेरे मन के जज्बातों को भी
ठोकरो में है पलना है,..
छोड़ अपने जख़्मों को
फिर है चढ़ना आँच पर,
एक और जख्म पकाने को,..
फिर एक बार
माटी सा ढला है मेरा मन बस चुपचाप सा.....

इश्क तुम रहने भी दो

अपनी वफाओं का तुम हिसाब रहने भी दो,
तुमें न मिलेगा इश्क का खिताब रहने भी दो।

हमने तो आसमानों तक परवाज़ माँगी थी,
मेरा पूरा न हुआ जमीं का ख्वाब रहने भी दो।

एहसासों को लफ्जों में पिरो पन्नों पे उतारते है,
हम अश्को से लिख दे सारी किताब रहने भी दो।

आओ बैठो पनाह लें लो ज़रा मेरे पहलू में,
हटा देंगे अपने रुख से हिजाब रहने भी दो।

तुझसे मिलने फिर उन्ही राहों पे चले आए हम,
मिलता नहीं तेरे कदमों का हिसाब रहने भी दो।

बेशक चमकता को चाँद फ़लक पे चाँदनी लिए,
तुम्ही हो मेरे दिल का ....महताब रहने भी दो।

एक पवित्र अग्नि लिए प्रज्वलित हो तुम मुझमें,
तुम्ही से रौशन है मेरा आफ़ताब रहने भी दो।

हम तो अश्कों को तेरी यादों से सजाए रहते है,
लगा लिए हैं पलकों के मैंने नकाब रहने भी दो।

सागर किनारे

सागर किनारे,
खामोशियों को लिए बैठी हूँ,
एहसासों की क़लम लिए
आँसुओं से लफ़्ज़ लिखती हूँ,....
तन्हा हूँ अकेली नहीं,
बीते पलों को साथ रखती हूँ ....
किए थे जो फ़ैसले तक़दीर ने मेरी
उसे बूँदों से मिटाने चली हूँ,...
पानी पर पानी से लिख नाम तेरा
तेरी मूरत बनाने लगी हूँ,
पलकों ने छ्लका दी है कुछ बूंदें
मन के तूफानों को सागर में मिलाने लगी हूँ,..
शायद मिल जाएं इसे तो किनारे,
कहीं छुपी बैठी हो..इक बूंद,
जो तेरी आँख से उड़ कर आई हो
और इस सागर मे समाई हो,..
तेरी मेरी कहानी को
आंसुओं से भिगोने लगी हूँ
पानी पर पानी से ..लिख कर तुझे
अपना हाल बताने लगी हूँ,...
सागर किनारे
खामोशियों को लिए बैठी हूँ
तन्हा हूँ अकेली नहीं ...
बीते पलों को साथ रखती हूँ ......

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डेज़ी जूनेजा

जन्म - 01 मई

पता - मोहाली (चंडीगढ़)

संपर्क - 8437599353

ई मेल - Daizy.juneja@gmail.com

प्रकाशन - 'गुलनार और मृगयनी' (साँझा काव्य संग्रह) सत्यम प्रकाशन द्वारा।

एक लघु कथा 'ट्रेक न्यूज' में प्रकाशित।

विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं, ई पत्रिकाओं एवं वेबसाइट्स पर रचनाएं प्रकाशित।

सम्मान - काव्य दंगल साहित्य प्रतियोगिता सम्मान।

काव्य सागर सम्मान ।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-31-5

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com